॥ॐ॥
॥ॐ श्री परमात्मने नमः॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

आरती संग्रह

विषय-सूची

श्री शिवजी जी 3
श्री गणेश जी 7
श्री हनुमान जी 8
श्री श्याम-सुन्दर जी 10
श्री सरस्वती माता जी 12
श्री लक्ष्मी माता जी 15
श्री सत्यनारायण जी 17
श्री अम्बे माता जी 19
श्री कुंजबिहारी जी 22
श्री संतोषी माता जी 24
श्री रामचन्द्र जी 26

श्री शिवजी जी

श्लोक

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं
सदा वसन्तं ह्रदयाविन्दे भंव भवानी सहितं नमामि ॥

आरती

जय शिव ओंकारा हर ॐ शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥
ॐ जय शिव ओंकारा

एकानन चतुरानन पंचांनन राजे ।
हंसासंन, गरुड़ासन, वृषवाहन साजे॥
ॐ जय शिव ओंकारा

दो भुज चारु चतुर्भज दस भुज अति सोहें ।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहें॥
ॐ जय शिव ओंकारा

अक्षमाला, बनमाला, मुण्ड़मालाधारी।
चंदन, मृगमद सोहें, भाले शशिधारी ॥
ॐ जय शिव ओंकारा

श्वेताम्बर,पीताम्बर, बाघाम्बर अंगें ।
सनकादिक, ब्रह्मादिक, भूतादिक संगें॥

ॐ जय शिव ओंकारा

कर के मध्य कमड़ंल चक्र, त्रिशूल धरता ।
जगकर्ता, दुःखहर्ता, जगपालनकर्ता ॥
ॐ जय शिव ओंकारा

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रवणाक्षर मध्यें ये तीनों एका॥
ॐ जय शिव ओंकारा

काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रम्हचारी ।
नित उठी भोग लगावत महिमा अति भारी ॥
ॐ जय शिव ओंकारा

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावें ।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावें ॥
ॐ जय शिव ओंकारा

जय शिव ओंकारा हर ॐ शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा॥
ॐ जय शिव ओंकारा

ॐ जय गंगाधर

ॐ जय गंगाधर जय हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा॥

हर जय गिरिजाधीशा।

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुंजति मधुकरपुंजे कुंजवने गहने॥
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता ॥
हर जय गिरिजाधीशा।

तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता॥
क्रीडा रचयति भूषारंचित निजमीशम्।
इंद्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम् ॥
हर जय गिरिजाधीशा।

बिबुधबधू बहु नृत्यत नामयते मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदंग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते॥
हर जय गिरिजाधीशा।

रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां॥
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते ॥
हर जय गिरिजाधीशा।

कपूर्रद्युतिगौरं पंचाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्॥
सुन्दरजटायकलापं पावकयुतभालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम् ॥
हर जय गिरिजाधीशा।

मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणं ॥
हर जय गिरिजाधीशा।

शंखनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते॥
अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा॥
हर जय गिरिजाधीशा।

ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रृणुते ॥
हर जय गिरिजाधीशा।

श्री गणेश जी

श्लोक

व्रकतुंड महाकाय, सूर्यकोटी समप्रभाः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येरुषु सवर्दा ।।

आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।

एकदन्त दयावन्त चार भुजाधारी।
माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी।।

पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डू अन का भोग लगे सन्त करे सेवा।।

अन्धे को आँख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।।

हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
सूरश्याम शरण आए सुफल कीजे सेवा।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।

श्री हनुमान जी

श्लोक

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं,जितेन्द्रियं,बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं, श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे ।।

आरती

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपे, रोग दोष जाके निकट न झाँके।।
आरती कीजै हनुमान लला की दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

अंजनि पुत्र महा बलदायी, संतन के प्रभु सदा सहायी।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ।।
आरती कीजै हनुमान लला की दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

लंका सौ कोटि समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर संहारे, सिया रामजी के काज संवारे ।।
आरती कीजै हनुमान लला की दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, आनि संजीवन प्राण उबारे ।
पैठि पाताल तोरि जम कारे, अहिरावन की भुजा उखारे ।।
आरती कीजै हनुमान लला की दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

बाँये भुजा असुरदल मारे, दाहिने भुजा संत जन तारे ।

सुर नर मुनि आरति उतारें, जय जय जय हनुमान उचारें ।।
आरती कीजै हनुमान लला की दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

कंचन थार कपूर लौ छाई, आरती करती अंजना माई ।
जो हनुमान जी की आरती गावे, बसि वैकुण्ठ परम पद पावे ।।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।

श्री श्याम-सुन्दर जी

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट,दास जनों के संकट,
क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे

जो ध्यावे फल पावे,
दुख बिनसे मन का,स्वामी दुख बिनसे मन का
सुख सम्पति घर आवे,सुख सम्पति घर आवे,
कष्ट मिटे तन का, ॐ जय जगदीश हरे

मात पिता तुम मेरे,
शरण गहूं मैं किसकी, स्वामी शरण गहूं मैं किसकी .
तुम बिन और न दूजा, तुम बिन और न दूजा,
आस करूं मैं जिसकी, ॐ जय जगदीश हरे

तुम पूरण परमात्मा,
तुम अंतरयामी,स्वामी तुम अंतरयामी ,
पारब्रह्म परमेश्वर, पारब्रह्म परमेश्वर,
तुम सब के स्वामी, ॐ जय जगदीश हरे

तुम करुणा के सागर,
तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता,
मैं मूरख खल कामी, मैं सेवक तुम स्वामी,
कृपा करो भर्ता, ॐ जय जगदीश हरे

तुम हो एक अगोचर,
सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति,
किस विधि मिलूं दयामय, किस विधि मिलूं दयामय,
तुमको मैं कुमति, ॐ जय जगदीश हरे

दीनबंधु दुखहर्ता,
ठाकुर तुम मेरे, स्वामी ठाकुर तुम मेरे,
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ,
द्वार पड़ा तेरे, ॐ जय जगदीश हरे

विषय विकार मिटाओ,
पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा,.
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,
संतन की सेवा, ॐ जय जगदीश हरे

तन-मन-धन प्रभु,
सब कुछ है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा,
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा, स्वामी क्या लागे मेरा,
ॐ जय जगदीश हरे

श्याम-सुन्दर जी की आरती,
जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे,
भाव भक्ति श्रध्दा से, मनवांछित फल पावे,
स्वामी मनवांछित फल पावे,
ॐ जय जगदीश हरे

श्री सरस्वती माता जी

श्लोक

कज्जल पुरित लोचन भारे, स्तन युग शोभित मुक्त हारे |
वीणा पुस्तक रंजित हस्ते, भगवती भारती देवी नमस्ते॥

आरती

जय सरस्वती माता ,जय जय हे सरस्वती माता |
दगुण वैभव शालिनी ,त्रिभुवन विख्याता॥
जय सरस्वती माता।

चंद्रवदनि पदमासिनी , घुति मंगलकारी |
सोहें शुभ हंस सवारी,अतुल तेजधारी ॥
जय सरस्वती माता।

बायेँ कर में वीणा ,दायें कर में माला |
शीश मुकुट मणी सोहें ,गल मोतियन माला ॥
जय सरस्वती माता।

देवी शरण जो आयें ,उनका उद्धार किया |
पैठी मंथरा दासी, रावण संहार किया ॥
जय सरस्वती माता।

विद्या ज्ञान प्रदायिनी , ज्ञान प्रकाश भरो |

मोह और अज्ञान तिमिर का जग से नाश करो ॥
जय सरस्वती माता।

धुप ,दिप फल मेवा माँ स्वीकार करो |
ज्ञानचक्षु दे माता , भव से उद्धार करो ॥
जय सरस्वती माता।

माँ सरस्वती जी की आरती जो कोई नर गावें |
हितकारी ,सुखकारी ग्यान भक्ती पावें ॥
जय सरस्वती माता।

जय सरस्वती माता ,जय जय हे सरस्वती माता |
सदगुण वैभव शालिनी ,त्रिभुवन विख्याता॥
जय सरस्वती माता।

बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले ना भीख।
जय सरस्वती माता।

श्री सरस्वती प्रार्थना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृताया
वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभि र्देवैः सदा
वन्दिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥1॥

जो विद्या की देवी भगवती सरस्वती कुन्द के फूल, चंद्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह धवल वर्ण की हैं और जो श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, जिनके हाथ में वीणादण्ड शोभायमान है, जिन्होंने श्वेत कमलों पर आसन ग्रहण किया है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर आदि देवताओं द्वारा जो सदा पूजित हैं, वही संपूरण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली माँ सरस्वती हमारी रक्षा करें ॥1॥

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्हस्ते
स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्वन्दे
तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥2॥

शुक्लवर्ण वाली, संपूर्ण चराचर जगत्में व्याप्त, आदिशक्ति, परब्रह्म के विषय में किए गए विचार एवं चिंतन के सार रूप परम उत्कर्ष को धारण करने वाली, सभी भयों से भयदान देने वाली, अज्ञान के अँधेरे को मिटाने वाली, हाथों में वीणा, पुस्तक और स्फटिक की माला धारण करने वाली और पद्मासन पर विराजमान् बुद्धि प्रदान करने वाली, सर्वोच्च ऐश्वर्य से अलंकृत, भगवती शारदा (सरस्वती देवी) की मैं वंदना करता हूँ ॥2॥

श्री लक्ष्मी माता जी

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुम को निस दिन सेवत, मैयाजी को निस दिन सेवत
हर विष्णु धाता ।। ॐ जय लक्ष्मी माता

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
मैया तुम ही जग माता, सूर्य चन्द्र माँ ध्यावत,
नारद ऋषि गाता।। ॐ जय लक्ष्मी माता

दुर्गा रूप निरन्जनि, सुख सम्पति दाता।
मैया सुख सम्पति दाता, जो कोई तुम को ध्यावत,
ऋद्धि सिद्धि धन पाता।। ॐ जय लक्ष्मी माता

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
मैया तुम ही शुभ दाता, कर्म प्रभाव प्रकाशिनि,
भव निधि की त्राता।। ॐ जय लक्ष्मी माता

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्‌गुण आता।
मैया सब सद्‌गुण आता, सब संभव हो जाता,
मन नहीं घबराता।। ॐ जय लक्ष्मी माता

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
मैया वस्त्र न कोई पाता, ख़ान पान का वैभव,
सब तुम से आता।। ॐ जय लक्ष्मी माता

शुभ गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता।
ओ मैया क्षीरोदधि जाता, रत्न चतुर्दश तुम बिन,
कोई नहीं पाता।। ॐ जय लक्ष्मी माता

महा लक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
मैया जो कोई जन गाता, उर आनंद समाता,
पाप उतर जाता।। ॐ जय लक्ष्मी माता

श्री सत्यनारायण जी

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा

रत्नजटित सिंहासन अद्भुत छबि राजै।
नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजै।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा

प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर कंचन-महल कियो।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा

दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा

भाव-भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा
ग्वाल-बाल सँग राजा वन में भक्ति करी।

मनवांछित फल दीन्हों दीनदयालु हरी।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा

चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल, मेवा।
धूप-दीप-तुलसी से राजी सत्यदेवा।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा

श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावै।
तन-मन-सुख-सम्पत्ति मन-वांछित फल पावै।।
ॐ जय लक्ष्मी रमणा

श्री अम्बे माता जी

श्लोक

सर्वमंगल मांग्लयै , शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरी , नारायणी नमोऽस्तुते ।।

आरती

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी
तुम को निस दिन ध्यावत, मैयाजी को निस दिन ध्यावत,
हरि ब्रह्मा शिव री ।। ॐ जय अम्बे गौरी॥

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मद को।
मैया टीको मृगमद को,
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ।।
ॐ जय अम्बे गौरी

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर साजे।
मैया रक्ताम्बर साजे
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे।।
ॐ जय अम्बे गौरी

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
मैया खड्ग खपर धारी
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुख हारी।।

ॐ जय अम्बे गौरी

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
मैया नासाग्रे मोती
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति।।
ॐ जय अम्बे गौरी

शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती।
मैया महिषासुर घाती
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती।।
ॐ जय अम्बे गौरी

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मैया शोणित बीज हरे
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।
ॐ जय अम्बे गौरी

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। मैया तुम कमला रानी
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।
ॐ जय अम्बे गौरी

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों। मैया नृत्य करत भैरों
बाजत ताल मृदंग और बाजत डमरू।।
ॐ जय अम्बे गौरी

तुम हो जग की माता, तुम ही हो भर्ता। मैया तुम ही हो भर्ता
भक्तन की दुख हर्ता, सुख सम्पति कर्ता।।

ॐ जय अम्बे गौरी ॥

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी। मैया वर मुद्रा धारी
मन वाँछित फल पावत, सेवत नर नारी।।
ॐ जय अम्बे गौरी
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मैया अगर कपूर बाती
माल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योती।।
ॐ जय अम्बे गौरी

माँ अम्बे की आरती, जो कोई नर गावे।
मैया जो कोई नर गावे
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे।।
ॐ जय अम्बे गौरी

देवी वन्दना

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम: ।।

श्री कुंजबिहारी जी

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
गले में बैजंती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला,
नंद के आनंद नंदलाला।
गगन सम अंग कांति काली,
राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली;
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चंद्र सी झलक;ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसै,
देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै;
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग;
अतुल रति गोप कुमारी की ॥
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की

आरती कुंजबिहारी की,

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

.

जहां ते प्रकट भई गंगा,
कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा; बसी शिव शीस,
जटा के बीच, हरै अघ कीच;
चरन छवि श्रीबनवारी की ॥
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनू,
बज रही वृंदावन बेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू;हंसत मृदु मंद,
चांदनी चंद, कटत भव फंद;
टेर सुन दीन भिखारी की॥
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

श्री संतोषी माता जी

ॐ जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता ।
अपने सेवक जन को, सुख संपति दाता ॥
ॐ जय संतोषी माता

सुंदर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हो ।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हो ॥
ॐ जय संतोषी माता

गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे ।
मंद हँसत करुणामयी, त्रिभुवन जन मोहे ॥
ॐ जय संतोषी माता

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर दुरे प्यारे ।
धूप, दीप, मधुमेवा, भोग धरें न्यारे ॥
ॐ जय संतोषी माता

गुड़ अरु चना परमप्रिय, तामे संतोष कियो।
संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ॥
ॐ जय संतोषी माता

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ॥
ॐ जय संतोषी माता

मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई ॥
ॐ जय संतोषी माता

भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।
जो मन बसे हमारे, इच्छा फल दीजै ॥
ॐ जय संतोषी माता

दुखी, दरिद्री, रोगी, संकटमुक्त किए ।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए ॥
ॐ जय संतोषी माता

ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो ।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनंद आयो ॥
ॐ जय संतोषी माता

शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदंबे ।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अंबे ॥
ॐ जय संतोषी माता

संतोषी मां की आरती, जो कोई नर गावे ।
ऋद्धि-सिद्धि सुख संपत्ति, जी भरकर पावे ॥
ॐ जय संतोषी माता

श्री रामचन्द्र जी

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणं ।
नव कंजलोचन, कंज - मुख, कर - कंज, पद कंजारुणं ।।

कंन्दर्प अगणित अमित छबि नवनील - नीरद सुन्दरं।
पटपीत मानहु तडित रूचि शुचि नौमि जनक सुतवरं ।।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकन्दंन।
रधुनन्द आनंदकंद कौशलचन्द दशरथ - नन्दनं ।।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदारु अंग विभूषां ।
आजानुभुज शर - चाप - धर सग्राम - जित - खरदूषणमं ।।

इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन रंजनं ।
मम हृदय - कंच निवास कुरु कामादि खलदल - गंजनं ।।

मनु जाहिं राचेउ मिलहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सिलु सनेहु जानत रावरो ।।

एही भाँति गौरि असीस सुनि सिया सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजी पुनिपुनि मुदित मन मन्दिरचली ।।

दोहा

जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ।।

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।